IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन तकनीक का शैक्षणिक और सामाजिक शोध में महत्व

रेखा जाँगिड़
शोधार्थी
डॉ. अनिता उपाध्याय
शोध निर्देशिका
श्याम यूनिवर्सिटी (दौसा)

सारांश

सामाजिक शोध में गणनात्मक तथ्यों के साथ गुणात्मक तथ्यों का महत्व भी है। गुणात्मक तथ्यों के संकलन हेतु अवलोकन तकनीक का प्रयोग किया जाता रहा है। समय के साथ विधि आधारित साधन विभिन्न प्रकार की परियोजनाओं एवं कार्यक्रमों में कार्यरत संस्थाओं अथवा व्यक्तियों द्वारा बढ़ती मांग को संतुष्ट करने के लिए अधिक परिष्कृत हुए है तथा समय-कुशल हुए हैं। चूंकि सहभागी अवलोकन जैसी वैज्ञानिक तकनीकें व्यापक एवं समय लेने वाली तकनीकें हैं व्यावहारिक समाज विज्ञानी उन साधनों एवं तकनीकों को लेकर आए हैं जो सम्पूर्ण सटीकता के साथ कम समयावधि में स्पष्ट परिणाम उपलब्ध करवा सकती हैं। इनमें से एक तकनीक है 'सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन' अथवा पार्टिसिपेटरी रूरल एप्रेजल। ग्रामीण सामाजिक शोध के लिए सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन तकनीक का उपयोग बढ़ रहा है। कई सरकारी और गैर सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में आज इस तकनीक का उपयोग हो रहा है। फिर वह भौगोलिक क्षेत्र हो अथवा शैक्षिक क्षेत्र किसी भी क्षेत्र में सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन तकनीक का उपयोग बढ़ रहा है। सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन पीआरए अनुसंधान तकनीक 1980 के दशक में विकसित हुई और ग्रामीण क्षेत्रों में किए गए सहभागी अनुसंधान का परिणाम है। इसने अंततः एक ऐसी पद्धति की नींव रखी जिसका उपयोग शोधकर्ताओं

और शोधार्थियों दोनों की सक्रिय भागीदारी के साथ समुदायों की बेहतरी के लिए किया जाना था अर्थात सहभागी अनुसंधान मूल्यांकन तकनीक के द्वारा।

प्रस्तुत शोध पत्र में इस तकनीक के महत्वए चरणों और सामाजिक एवं शैक्षणिक शोध कार्यों में इस विधि के महत्व को स्पष्ट किया गया है जिससे भविष्य में इस तकनीक का उपयोग सामाजिक और शैक्षणिक शोध कार्यों में बढ़ सके और ग्रामीण विकास में इसका योगदान भी बढे।

मुख्य शब्द – सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन शोध तकनीक विधि ग्रामीण विकास

प्रस्तावना

सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन पीआरए अनुसंधान तकनीक 1980 के दशक में विकसित हुई और ग्रामीण क्षेत्रों में किए गए सहभागी अनुसंधान का परिणाम है। मानवशास्त्रीय पद्धति ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एक विशाल बदलाव देखा है और यह बदलाव इसके व्यवहारिक पहलुओं में भी देखा गया था। हालांकि 1970 के दशक के मध्य में पीआरए की आवश्यकता मानवविज्ञानी के बीच स्पष्ट रूप से महसूस की गई थी जब मानवशास्त्रीय समझ को दलित गरीब और उत्पीड़ित लोगों के उत्थान के लिए क्रियान्वित किया गया। इसने अंततः एक ऐसी पद्धति की नींव रखीए जिसका उपयोग शोधकर्ताओं और शोधार्थियों दोनों की सक्रिय भागीदारी के साथ समुदायों की बेहतरी के लिए किया जाना था अर्थात सहभागी अनुसंधान मूल्यांकन तकनीक के द्वारा।

प्रारम्भ में सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन को सहभागिता शोध मूल्यांकन का नाम दिया गया परंतु गाँवों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी निरंतर उपयोगिता के कारण यह तकनीक बाद में सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन के रूप में जानी गयी। सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन में शोधकर्ता एवं स्थानीय लोग स्थानीय लोगों की क्षमताओं का उपयोग करते हुए एक साथ मिलकर समस्याओं की पहचान करने के लिए काम करते हैं। शोधकर्ता की भूमिका सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन प्रक्रिया में स्थानीय समुदायों के सशक्तिकरण एवं क्षमता विकसित करने के आदर्श उद्देश्य को लक्षित करते हुए मात्र एक समन्वयक की होती है। तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन से भिन्न सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन एक लंबी प्रक्रिया है जो कि काफी लंबे समय तक चलती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रक्रिया में सम्मिलित समुदाय अपनी रूचियों को संबोधित करने के लिएए संभावित परिणामों का आंकलन करने के लिए तथा तदनुसार अपने लाभ के लिए प्रयासों को दिशा देने के

लिए अपनी दक्षता को एकत्रित करते हैं। अतः इस प्रकार पीआरए गाँव के लोगों को अपने जीवन तथा परिस्थितियों की वास्तविकताओं का संज्ञान लेने सुधार करने तथा उनका अवलोकन करने की संभावना प्रदान करती है जिससे उन्हें योजना बनाने एवं कार्रवाही करने में सहायता मिलती है।

सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन के लाभ

1. सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन समीक्षा ग्रामीण स्तर पर समस्याओं की पहचान करने में सहायक होती है तथा नीतियों के उपयुक्त नियमन एवं कार्यान्वयन में सहायता करती है।
2. यह तकनीक ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के कार्यान्वयन एवं मूल्यांकन के दौरान सामुदायिक स्तर पर निगरानी रखने को सुनिश्चित करती है।
3. अन्य तकनीकों की तुलना में इस तकनीक द्वारा एकत्रित किए आंकड़े अधिक विश्वसनीय होते हैं तथा किसी प्रकार के पूर्वाग्रह से मुक्त होते हैं।

सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन की हानियां

1. स्थानीय समुदायों की प्रत्यक्ष भागीदारी के कारणए इस प्रक्रिया में कभी–कभी आवश्यक समय तथा बजट से अधिक लग सकता है।
2. चूंकि अध्ययन के अंतर्गत समुदाय के लोगों में वैचारिक मतभेद हो सकता है इसलिए एक शोधकर्ता के लिए सबके साथ सामंजस्य बैठा पाना कठिन हो जाता है। यह कभी कभी टकराव की परिस्थिति भी उत्पन्न कर देता है।
3. कुछ समुदायों में अन्य पर किसी एक पक्ष का प्रभुत्त्व आंकड़ों के निष्पक्ष संकलन की प्रक्रिया को बाधित करता है तथा इस परिस्थिति में अंतिम परिणाम कुछ ही लोगों के विचारों को प्रतिबिम्बित करते हैं।

तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन तथा सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन तकनीक का उपयोग करते समय व्यावहारिक मानव वैज्ञानिकों द्वारा कुछ निश्चित साधन उपयोग किए जाते हैं। यह हैः

केन्द्रित समूह चर्चा – इस चरण में ग्रामीणजनों पुरूषों महिलाओं बालिकाओं का एक समूह बनाकर उनकी समस्याओं अथवा शोध समस्या से संबंधित विषयों पर चर्चा करवायी जाती है। इस प्रकार की चर्चा में गुणात्मक मौलिक तथ्यों का संकलन किया जाता है।

संसाधन मानचित्र – यह मानचित्र ग्रामीण भ्रमण करके बनाया जाता है। जिसमें ग्रामीण क्षेत्र की भौगोलिकताए पानी की स्थिति खेती की स्थिति गरीबी का स्तर विद्यालयों की दूरी परिवहन समस्या आदि का पता लगाया जाता है।

सामाजिक मानचित्र – यह मानचित्र भी ग्रामीण भ्रमण करके बनाया जाता है। जिसमें ग्रामीण क्षेत्र में जातिगतए जनजातीयए धार्मिक स्थिति का आंकलन किया जाता है।

इस प्रकार के सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन से शोध समस्या का गहन अध्ययन किया जाता है।

सामाजिक एवं शैक्षणिक शोध में सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन की भूमिका

वर्तमान में सामाजिक विकास के क्षेत्र में कई शोधकार्य हो रहे है। यह शोधकार्य समस्याओं को जानने के लिए ही नहीं वरन् कई महत्वपूर्ण योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए भी हो रहे है। ग्रामीण क्षेत्र में जल जीवन मिशन भूजल वृद्धि अमृतम् जलम् बालिका सशक्तीकरण बालिका शिक्षा से जुडे मुद्दों आदि पर कई योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। सरकारी स्तर पर यह विचार किया जाता है कि कोई भी योजना समाज की सहभागिता के बिना पूर्ण नहीं हो सकती है। किसी भी सामाजिक समस्या को दूर करने के लिए उसके समाधान से समाज को सहभागी करना आवश्यक है। ऐसे में सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

शैक्षणिक शोध कार्य भी जो जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षाए विद्यालयों की स्थितिए शिक्षा के स्तर अध्यापकों की स्थिति और विद्यार्थियों की स्थिति जानने के लिए होते है अथवा ऐसे शोध कार्य जो ग्रामीण क्षेत्र में बालिका शिक्षा और महिला सशक्तीकरण से संबंधित होते है उनमें तथ्यों के उचित संकलन के लिए यह आवश्यक है कि शोधार्थी पहले ग्रामीण क्षेत्र में अपनी एक पहचान बनाए। ग्रामीणजन शोधार्थी को अपने समाज का हिस्सा माने और उसकी बात को समझे। ऐसा करने में शोधार्थी को वास्तविक तथ्यों की प्राप्ति हो सकेगी। इसके कारण उसके शोध में मौलिकता आएगी। इस प्रकार के अध्ययन के लिए सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन तकनीक बहुत अधिक महत्व रखती है। इस तकनीक के द्वारा शोधार्थी ग्रामीणों से भावनात्मक रूप से जुड जाता है। वह ना केवल ग्रामीणों की समस्याओं को उनके नजरिए से समझता है वरन् उनकी समस्याओं का समाधान भी ग्रामीणों के नजरिए से ही करता है। ऐसे में सहभागी ग्रामीण

मूल्यांकन तकनीक का का उपयोग सामाजिक और शैक्षणिक शोध में बढाने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

वर्तमान में शोधकार्यो में गणनात्मक तथ्यों का ही उपयोग हो रहा है और यह एक परम्परा बन चुकी है। इस परम्परा को तोडन के साथ गुणात्मकता को बढाने के लिए इस प्रकार की विधियों का उपयोग किया जाना आवश्यक है जो भविष्य में शोध के महत्व को भी स्पष्ट कर सके।

संदर्भ सूची

1. Butler, L. M. (1995). The 'SONDEO': A Rapid Reconnaissance Approach for Situational Assessment. WREP 127, Partnership in Education and Research.
2. Das, M. (2012). Tools for Professional Practice. In Transforming Knowledge into Praxis (pp. 5-20). New Delhi: Indira Gandhi National Open University.
3. Herron, R. (2006). Anthropometry: Definition, Uses, and Methods of Measurement. In International Encyclopedia of Ergonomics and Human Factors (Second ed.). New York: CRC Press.
4. Kedia, S., & Bennet, L. A. (2005). Applied Anthropology. In Anthropology, from Encyclopedia of Life Support Systems. Oxford, United Kingdom: EOLSS Publishers.
5. Pandey, G. (2018). Anthropological Research Methodology: Theory and Practice. New Delhi: Concept Publishing Company.
6. Participatory Action Research and Evaluation. (2021). Retrieved April 19, 2021, from Organizing Engagement: https://organizingengagement.org/
7. UCLA, L. (Director). (1987). Rapid Assessment Procedures for Nutrition and Primary Health Care [Motion Picture].